प्राक्कथन : Introduction

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के समय से ही भाषागत विषयों की ओर मेरी रुचि सविशेष रही है। साहित्य से मानवसंस्कारों का पल्लवन होता है। हम मनुष्य-योनि में जन्म तो लेते हैं, परन्तु हमारी कई मूलभूत वृत्तियाँ पशुवत् होती हैं। इस मनुष्य-पशु को मनुष्य के रूप में संस्कारित और परिवर्तित करने का दायित्व काव्य या साहित्य पर है। कवि कुलगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहीं लिखा था कि जिन लोगों ने काव्य और शास्त्र उभय का अध्ययन-अनुशीलन किया है उनका भाग्य तो सर्वोपरि है। जिन्होंने काव्य या साहित्य का अध्ययन किया है किन्तु शास्त्रज्ञान जिनके पास नहीं है उनके भाग्य को हम मध्यम कक्षा का कह सकते हैं। किन्तु जिन्होंने केवल शास्त्र पढ़ा है और काव्य और साहित्य को स्पर्श तक नहीं किया है, उनका भाग्य तो मंदातिमंद है। हमारे यहाँ कहा भी गया है ''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्'' अर्थात् काव्य और शास्त्र से जो आनंद प्राप्त होता है उसमें व्यक्ति का समय कहाँ व्यतीत हो जाता है उसका संज्ञान तक नहीं होता। साहित्य से मानव-चेतना का विकास होता है। साहित्य के अध्ययन द्वारा हम समूचे विश्व के मानव-समुदाय उसकी सभ्यता और संस्कृति से पूर्णरूपेण परिचित हो सकते हैं। यूरोप, अमरीका गये बिना वहाँ के साहित्य के अध्ययन द्वारा हम वहाँ के समाज को भली-भाँति समझ सकते हैं। बिहार, बंगाल, उडीसा, या कर्णाटक गये बिना हम उन-उन प्रदेशों के साहित्य द्वारा वहाँ के मानव-जीवन की गतिविधियों का अध्ययन कर सकते हैं। अभिप्राय यह है कि साहित्य के अध्ययन से हमारी चेतना का विकास होता है। शास्त्र हमको ज्ञान देते हैं परन्तु साहित्य हमें रूपांतरित करता है। हमारे यहाँ विभिन्न शास्त्रों को काव्य या साहित्य की योनियाँ कहा गया है। इसका यह अर्थ हुआ कि काव्य या साहित्य में किसी न किसी तरह दूसरे कई

विषयों का ज्ञान समाविष्ट हो जाता है । काव्यहेतुओं में प्रतिभा के साथ व्युत्पत्ति को स्थान दिया गया है । व्युत्पत्ति का अर्थ है-विविध विषयों या शास्त्रों का ज्ञान। संक्षेप में कहें तो साहित्य का महत्व एवं उपादेयता अपरिहार्य है। और मेरे लिए यह अतीव हर्ष की बात है कि शिक्षा के प्रारंभिक दिनों से ही मेरी यत्किंचित गति साहित्य की ओर रही है।

अतः माध्यमिक शिक्षा के उपरांत जब मुझे उच्च-शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने स्नातक कक्षाओं में, हिन्दी और संस्कृत को लिया। अनुस्नातक के लिए मैंने समग्र हिन्दी को लिया और गुजरात विश्वविद्यालय में प्रथम कक्षा में प्रथम आते हुए स्वर्णपदक को प्राप्त किया। एम.ए. के उपरांत गुजरात विश्वविद्यालय से ही मैंने एम.फिल. की उपाधि प्राप्त की। सन १९९३ से मैं गुजरात विश्वविद्यालय के सेठ पी.टी. आर्ट्स एण्ड सायन्स कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक के रूप में कार्यरत हूँ।

इस रूप में मैं अपने को भाग्यशाली पाता हूँ कि मुझे मेरी अभिरुचि का ही काम मिला है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत विश्वविद्यालयों तथा कॉलेज के अध्यापकों को रिफ्रेसर कोर्स करने पड़ते हैं। इस सिलसिले में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. पारुकांत देसाई साहब के सम्पर्क में आना हुआ। मैंने तत्काल अपना मन बना लिया था कि यदि पी-एच.डी. करने का अवकाश प्राप्त हुआ तो मैं उनके मार्गदर्शन में ही अपना कार्य संपन्न करूँगा। मेरी यह इच्छा सन् २००१ में पूरी हुई। जब मैंने पी-एच. डी. उपाधि हेतु अपना नाम उनके अन्तर्गत पंजीकृत करवाया।

पंजीकरण के पूर्व तीन-चार महीने उन्होंने बाकायदा 'शोध और अनुसंधान' की प्रक्रिया के सन्दर्भ में सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रविधियों और आयामों से

परिचित करवाया। एतद् विषयक पारिभाषिक शब्दों को समझाया। कुछ शोध प्रबंधों को सामने रखकर शोध सन्दर्भ, सन्दर्भानुक्रम, सन्दर्भ-ग्रंथ, उपजीव्य ग्रंथ, ग्रंथानुक्रमणिका (Bibliography) आदि के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

इन तीन-चार महीनों में हिन्दी साहित्य में मेरी गति और रुचि को देखते हुए उन्होंने मुझे कथासाहित्य पर शोधकार्य करने का परामर्श देते हुए कहा कि तुम अपनी पसंद के किसी समकालीन कथाकार का नाम सोचकर कुछ दिनों के बाद मुझे मिलना। उसके बाद की बैठक में मैंने समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर मन्नू-भंडारी का नाम प्रस्तावित किया। इसके पश्चात् एक सप्ताह बाद जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने मेरे शोधकार्य हेतु विषय प्रस्तावित किया "मन्नू-भंडारी के कथा-साहित्य में मानव-जीवन की समस्याओं का निरूपण : एक अनुशीलन।"

और इस प्रकार सन् २००१ को मैं उक्त विषय के साथ महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर डॉ. पारुकांत देसाई के अन्तर्गत विधिवत् पंजीकृत हो गया। विषय निर्धारण के पश्चात् देसाई साहब ने मुझे प्रोफेसर डॉ. भ.ह.राजूरकर, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रवीन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. तिलक सिंह तथा गुजराती के मूर्धन्य विद्वान पंडित के.का. शास्त्री आदि विद्वानों के शोध-अनुसंधान विषयक ग्रंथों को तथा कथासाहित्य के क्षेत्र में प्रकाशित, अप्रकाशित कतिपय शोध-प्रबंधों को देख जाने के लिए कहा। इस प्रकार मेरी शोधयात्रा का प्रारंभ हुआ। जब यह शोधयात्रा प्रारंभ हुई तब मैं इस तथ्य से अवगत् हुआ कि अपनी अभिरुचि और मनोरंजन हेतु साहित्य को पढ़ना एक बात है और किसी विषय को सामने रखकर शोध-अनुसंधान की दृष्टि से उसका

अनुशीलन करना दूसरी बात है। यह वास्तव में टेढ़ी खीर है। अपने शोध-विषयक उपजीव्य ग्रंथों तथा सन्दर्भ ग्रंथों को कई-कई बार देख जाने के उपरांत शोध-प्रबंध के उपर्युक्त निर्वाह हेतु हमने उसे निम्नलिखित सात अध्यायों में विभक्त किया है :-

१. विषय-प्रवेश
२. मन्नू जी के उपन्यासों तथा कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन।
३. मन्नू जी के कथासाहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएँ।
४. मन्नू जी के कथासाहित्य में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ।
५. मन्नू जी के कथासाहित्य में आर्थिक समस्याएँ।
६. मन्नू जी के कथासाहित्य में राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं अन्य समस्याएँ।
७. उपसंहार।

साठोत्तरी कथासाहित्य में मन्नू भंडारी का एक विशिष्ट स्थान है। राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, डॉ. रामदरश मिश्र, भीष्म साहनी, रमेश बख्शी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा प्रभृति अपने समकालीन हस्ताक्षरों में मन्नू जी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। कथासाहित्य के अन्तर्गत उपन्यास और कहानी दोनों को लिया जाता है। अपने लेखन के प्रारंभिक दौर में मन्नूजी ने अपने पति राजेन्द्र यादव के सहलेखन में 'एक इंच मुस्कान' नामक उपन्यास की रचना की थी। उसके पश्चात् मन्नू जी की स्वतंत्र पहचान उनके बहुचर्चित एवं महत्वपूर्ण उपन्यास 'आपका बंटी' से बनती है। लेखिका की एक अन्य कृति 'बिना दीवारों के घर' एक नाट्य कृति है, किन्तु कथ्य की दृष्टि से वह 'आपका बंटी' से बहुत करीब पड़ती है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों पर प्रायः एक आरोप लगाया जाता है कि उनमें स्त्री-पुरुष के यौन-संबंधों की

भरमार रहती है। किन्तु 'आपका बंटी' में लेखिका ने मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को एक नया धरातल दिया है। आधुनिक समय में नारी-शिक्षा, नारी मुक्ति आंदोलन तथा कतिपय नारी की पक्षधर विचारधाराओं के कारण शिक्षित समाज में पति-पत्नी के अहं की टकराहट की घटनाएँ बहुत बढ़ रही है। इस खंडित दाम्पत्य जीवन में सबसे दयनीय स्थिति उस बच्चे की होती है जो इन दोनों के वैवाहिक जीवन का परिणाम है। 'आपका बंटी' उपन्यास में बच्चे की इसी स्थिति को उकेरा गया है। कृष्ण बलदेव वैद्य के उपन्यास 'उसका बचपन' तथा भीष्म साहनी के उपन्यास 'कडियाँ' में भी इसी कथानक को उठाया गया है। परन्तु उक्त दो उपन्यासों में जहाँ अन्य पहलुओं को लिया गया है वहाँ 'आपका बंटी' उपन्यास के समूचे उपन्यास में बंटी की जो दयनीय व अमानवीय स्थिति है उसी को केन्द्रस्थ किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में अजय, शकुन तथा बंटी को लेकर स्थान-स्थान पर लेखिका के जो मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हैं उसकी ओर पाठकों का ध्यान बरबस चला जाता है और इस दृष्टि से इस एक उपन्यास के बल पर मन्नू जी की ख्याति हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ उपन्यासकारों में होने लगती है। इन्हीं दिनों में कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, कृष्णा अग्निहोत्री, दिप्ती खंडेलवाल, मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं के उपन्यासों को लेकर हिन्दी के एक तबके में यह चर्चा उठने लगी कि हिन्दी की ये लेखिकाएँ अपनी गृहस्थी के सीमित वृत्त से ऊपर उठकर लिखने की क्षमता नहीं रखती, तब मानो इसके प्रत्युत्तर में 'जिंदगीनामा' (कृष्णा सोबती), 'महाभोज' (मन्नू-भंडारी), 'टपरे वाले', (कृष्णा सोबती) 'अनित्य' (मृदुला गर्ग), 'अनारो' (मंजुल भगत)' जैसे उपन्यास आते हैं जिनमें समाज के बृहत्तर वृत्तों को स्पर्श किया गया है। 'महाभोज' उपन्यास में मन्नू जी ने हमारे राजनीतिक जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं और विकलांगता को बेपर्द किया है। उक्त दो

उपन्यासों के अलावा मन्नू जी के और भी दो लघु उपन्यास मिलते हैं- 'स्वामी' और 'कलवा'। 'स्वामी' बंगला उपन्यासकार शरतचंद्र की कहानी पर आधारित है तो 'कलवा' बाल उपन्यास है। इन उपन्यासों के अतिरिक्त मन्नू जी की कहानियाँ भी समकालीन साहित्य परिदृश्य में सदैव केन्द्र में रही हैं। इनके अद्यावधि पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'नायक, खलनायक, विदूषक' में मन्नू जी की लगभग सभी कहानियों को संग्रहीत किया गया है। इस प्रकार साठोत्तरी और समकालीन हिन्दी कहानीकारों में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में मन्नू जी ने अपना स्थान बना लिया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मन्नू जी के कथासाहित्य पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि शोध-प्रबंध के सुचारु नियोजन के लिए उसे सात अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय 'विषय प्रवेश' का है। प्रस्तुत अध्याय में आधुनिककाल में गद्य के विकास के उपरांत उपन्यास का आविर्भाव किन-किन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में हुआ उसको चिह्नित किया गया है। कथासाहित्य के तात्पर्य को स्पष्ट करते हुए उपन्यास और कहानी के साहित्य रूपों को परिभाषित किया गया है। यहाँ पर बहुत संक्षेप में उपन्यास और कहानी के तत्वों को भी उकेरा गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हमारा उपक्रम मन्नू जी के उपन्यासों और कहानियों का अध्ययन है और मन्नू जी की गणना साठोत्तर समकालीन लेखिकाओं में होती है। अतः उपन्यास और कहानी दोनों के विकास को रेखांकित करने का यत्न हुआ है। औपन्यासिक विकास क्रम में पूर्व प्रेमचन्द काल, प्रेमचन्दकाल तथा प्रेमचन्दोत्तर काल के औपन्यासिक साहित्य की संक्षिप्त चर्चा की गई है। प्रेमचंदोत्तर युग में जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, डॉ. इलाचन्द्र जोशी, फणीश्वरनाथ रेणु,

राजेन्द्र यादव, नागार्जुन, मोहन राकेश,मन्नू भंडारी आदि उपन्यासकारों के कृतित्व की संक्षेप में चर्चा की गई है। इसके पश्चात् हिन्दी कहानी के विकास को रेखांकित करते हुए विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', सुदर्शन, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'जी, के योगदान को स्पष्ट किया गया है। उसके बाद जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, यशपाल आदि के कृतित्व पर सार्थक टिप्पणी करते हुए नयी कहानी के सामर्थ्य और सीमाओं को अंकित किया गया है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध में मन्नू जी के कहानी साहित्य का अध्ययन, मानव समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। अतः यहाँ पर बहुत संक्षेप में कथासाहित्य और मानव समस्याओं के अंतः संबंध को प्रकाशित किया गया है। अध्याय के अंत में कथाकार मन्नू भंडारी के योगदान को निरूपित करते हुए मन्नू जी की कुछेक साहित्य विषयक अवधारणाओं को रखा गया है। अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा समग्र अध्याय से कतिपय निष्कर्षों को विश्लेषित किया गया है।

प्रबंध का आलोच्य विषय मन्नू भंडारी के कथासाहित्य से संबद्ध है, अतः द्वितीय अध्याय में मैंने मन्नू जी के उन्यासों एवं कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। मन्नू जी के उपन्यासों में 'एक इंच मुस्कान' सहलेखन में लिखा गया उपन्यास है। यह उपन्यास उन्होंने अपने लेखक पति राजेन्द्र यादव के साथ लिखा है। सहलेखन की यह परंपरा प्रेमचंद युग से हमें मिल रही है। प्रेमचंद युग में 'तपोभूमि' उपन्यास जैनेद्र तथा ऋषभचरण जैन के सहलेखन में लिखा गया था। उसके बाद 'बरह खंभा' तथा 'ग्यारह सपनों का देश' जैसे उपन्यास सहलेखन की परंपरा में आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास भी उसी श्रृंखला की एक कड़ी है। 'एक इंच मुस्कान' के पश्चात् मन्नू

जी का 'आपका बंटी' उपन्यास आता है। इसी एक उपन्यास से मन्नू जी का स्थान हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठत उपन्यासकारों की पंक्ति में आ जाता है। 'आपका बंटी' के अतिरिक्त 'महाभोज', 'स्वामी' और 'कलवा' उपन्यास आते हैं। 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक चेतना का उपन्यास है। 'स्वामी' एक लघु उपन्यास है, जिसमें उन्होंने शरत बाबू की एक कहानी को आधार बनाते हुए दाम्पत्य जीवन के कतिपय महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया है। 'कलवा' एक बाल-साहित्य का उपन्यास है। हिन्दी का बाल साहित्य अत्यंत कमजोर है, अतः लेखिका ने अपने लेखकीय उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए उसमें अपना यत्किंचित योगदान दिया है।

इसी अध्याय में मन्नू जी की कहानियों पर भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण से विचार किया गया है। मन्नू जी के पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें लगभग ५० के करीब कहानियाँ संग्रहीत हुई हैं। मन्नू जी की कहानियों में आधुनिक जीवन से संबद्ध मानवीय समस्याओं, दाम्पत्य जीवन में उभरने वाले द्वन्द्व आदि का बड़ा ही सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। मन्नू जी की इन कहानियों में 'यही सच है', 'बंद दराजों के साथ', 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'एक प्लेट सैलाब', 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'खोटे सिक्के', 'हार', 'तीसरा आदमी', 'रानी माँ का चबूतरा', 'बाहों का घेरा', 'त्रिशंकु', 'रेत की दीवार', 'आते-जाते यायावर' प्रभृति कहानियाँ हिन्दी समकालीन कहानी साहित्य में सविशेष चर्चित रही हैं। प्रस्तुत अध्याय में इस प्रकार उपन्यासों और कहानियों पर आलोचनात्मक दृष्टिपात किया गया है। अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा कुछ निष्कर्षों को निकाला गया है।

तृतीय अध्याय में मन्नू जी के उपन्यासों तथा कहानियों में जिन पारिवारिक

और सामाजिक समस्याओं का निरूपण हुआ है उनका समाकलन किया गया है। आधुनिक नगरीय जीवन में परिवार विभक्त हो रहे हैं। संयुक्त परिवार का आदर्श अब समाप्त-सा हो रहा है और विभक्त परिवार को लोग पसंद करने लगे हैं। पारिवारिक चेतना का स्थान वैयक्तिक चेतना ले रही है और परिवार टूटते-टूटते अब एकल परिवार की स्थिति का निर्माण भी हो रहा है। नारी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से यहाँ स्त्री का एक अलग व्यक्तित्व निर्मित हो रहा है। उसकी अपनी एक पहचान बन रही है वहाँ दूसरी तरफ शताब्दियों द्वारा संचित पुरुष मानसिकता और पितृ सत्तात्मक समाज के अभिलक्षणों के रहते स्त्री-पुरुष के दाम्पत्य-जीवन में भी अनेक नये प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं। दहेज की समस्या एक दूसरा रूप ले रही है और उसके कारण नारी जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन सब समस्याओं का आकलन प्रस्तुत अध्याय का केन्द्र-बिंदु रहा है। यहाँ भी समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

आधुनिक कथाकारों में मन्नू जी की गणना एक मनोवैज्ञानिक कथाकार के रूप में भी हो रही है। इधर पिछले डेढ़ सौ-दो सौ वर्षों में दो चिन्तन धाराओं ने साहित्य की दशा और दिशा निर्धारण करने में बड़ा योग दिया है। एक विचारधारा तो कार्लमार्क्स, लेनिन, एंजिल आदि मार्क्सवादी चिंतकों की विचारधारा है और दूसरी विचारधारा फ्रायड, एडलर, युंग, पावलोव आदि की मनोवैज्ञानिक विचारधारा है, जिन्होंने मानव-मन और उसके व्यवहार को थाहने की कोशिश की है। मन्नू जी का सरोकार इन दोनों विचारधाराओं से रहा है। एक तरह जहाँ उन्होंने मानवतावादी, समाजवादी जीवन मूल्यों को उकेरने का प्रयत्न किया है वहाँ दूसरी तरफ उन्होंने मानव मन की अतल गहराइयों को भी छूने का यत्न किया है। मनुष्य के जीवन में जो समस्याएँ

होती हैं वे समस्याएँ सामाजिक, आर्थिक, या पारिवारिक होती हैं। दूसरे एक तथ्य यह भी ध्यान देने योग्य रहेगा कि ये समस्याएँ भी परस्पर किसी अंतः सूत्र से जुड़ी हुई होती है। उदाहरण के तौर पर यदि हम 'आपका बंटी' के अजय और शकुन को लें तो उनके 'अहम्' की जो टकराहट है उसका उत्स मनोवैज्ञानिक समस्याओं में है। परंतु क्या इसके पीछे पुरूषसत्ताक समाज द्वारा पोषित वह मानसिकता नहीं है ? जिसके रहते कोई भी पुरुष अपनी पत्नी की अकादमिक प्रगति को बर्दाश्त नहीं कर पाता, उसकी आत्मनिर्भरता उसके पुरुष अहम् को कहीं न कहीं चोट पहुंचाते हैं। इस प्रकार यहाँ स्त्री का आर्थिक दृष्टिया आत्मनिर्भर होना पुरुष के अज्ञात मन में कोई न कोई मनोवैज्ञानिक समस्या पैदा करता है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने मन्नू भंडारी के कथासाहित्य में उपन्यासों एवं कहानियों में जिन मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निरूपण हुआ है उनको व्याख्यायित करने का यत्न किया गया है।

जैसाकि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है मन्नू जी के चिंतन पक्ष में मानवतावादी, समाजवादी मूल्य रहे हैं। अतः उन्होंने केवल अज्ञात मन की गहराइयों में जाने के साथ-साथ मनुष्य से जुड़ी हुई आर्थिक समस्याओं पर भी विचार किया गया है। भारतीय समाज में तो मनुष्य के इस आर्थिक पक्ष को कभी भुलाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि हमारी बहुत-सी समस्याओं के मूल में आर्थिक समस्याओं के बीज पड़े हुए हैं। कई बार देखा गया है कि आर्थिक समस्याएँ मनोवैज्ञानिक समस्याओं को भी जन्म देती है। मनोवैज्ञानिक समस्याओं में हम देख सकते हैं कि मनुष्य की कुंठाएँ मानव-जीवन में अनेक समस्याओं का निर्माण करती हैं। अक्सर यह देखा गया है कि लघुत्व ग्रंथि के पीछे व्यक्ति की अर्थजनित कुंठाएँ भी सामिल होती हैं। आर्थिक दृष्टिया संपन्न

व्यक्ति जितना प्रभावशाली और दबंग रहता है। आर्थिक समस्याओं में दबा हुआ व्यक्ति, कुंठित व्यक्ति उतना स्वतंत्र और दबंग नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि जीवन में आर्थिक समस्याओं की भूमिकाओं को भी नकारा नहीं जा सकता। हमारे यहाँ इसीलिए तो पुरुषार्थ चतुर्थ में धर्म के तुरंत बाद अर्थ को स्थान दिया गया है। आर्थिक समस्याओं के अन्तर्गत मैंने गरीबी की समस्या, बेरोजगारों की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, आवास की समस्या तथा भाई-भतीजावाद की समस्या जैसी समस्याओं पर मन्नू जी के कथासाहित्य को केन्द्र में रखते हुए, विचार-विमर्श किया है। पंचम् अध्याय इन्हीं सब समस्याओं को लेकर है। अध्याय के अंत में यहाँ भी निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

छट्ठे अध्याय में मैंने मन्नू जी के कथासाहित्य में उक्त समस्याओं के अतिरिक्त जो अन्य राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि समस्याएँ हैं, उनको समाकलित करने का यत्न किया है। हमारे आधुनिक जीवन में राजनीति कहाँ नहीं होती ? समाज,धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आरोग्य, कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जो राजनीति द्वारा परिचालित न होता हो। अतः हम देखते हैं कि आधुनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीतिक दखल है। राजनीति, धर्म और शिक्षा को भी प्रभावित कर रही है। वस्तुतः राजकारण और धर्मकारण दोनों भिन्न क्षेत्र हैं परंतु वर्तमान सन्दर्भ में राजकारण में धर्मकारण आने से अनेक मानवीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। यहाँ हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि धर्म का महत्व नहीं है, बल्कि हम तो यहाँ तक कहेंगे कि मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलाप में समाज की तमाम गतिविधियों में धर्म को केन्द्र में रखकर चलना होगा। परंतु जब हम धर्म कहते हैं तो हमारा तात्पर्य धर्म की व्यापक चेतना से है। साम्प्रदायिक संकुचितता से उसका कोई लेना-देना नहीं है। साहित्य और धर्म

दोनों का महती उद्देश्य दीवारों को ढहाना है, दीवारों का गिराना है, दूसरी नयी दीवारों को खड़ी करना नहीं है।

सातवाँ अध्याय उपसंहार का है, जिसमें मैंने समग्र प्रबन्ध को ध्यान में रखते हुए उसके निष्कर्षों और स्थापनाओं को प्रस्तुत किया है। शोध-प्रबंध की शक्ति और सीमा उभय को यहाँ अंकित किया गया है। इस विषय पर शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में भविष्यत संभावनाओं को भी उकेरा गया है।

प्रत्येक अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में सन्दर्भानुक्रम को भी यथासंभव वैज्ञानिक रीति से देने का हमारा उपक्रम रहा है। प्रबंध के अंत में एक परिशिष्ट के अन्तर्गत मन्नू जी से हुए साक्षात्कार का विवरण दिया गया है। अनुसंधित्सु का मन्नू जी से संपर्क करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके साथ जो वार्तालाप हुआ उसे हमने आधुनिक उपकरणों से कैसेटबद्ध किया है। उसके बाद प्रबन्ध के अंतिम भाग में ग्रन्थानुक्रमणिका के अन्तर्गत मैंने सहायक ग्रंथसूची (Bibliography) को अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया है। इसके अन्तर्गत उपजीव्य ग्रंथों की सूची, सहायक ग्रंथों की सूची, कोष इत्यादि की सूची तथा पत्र-पत्रिकाओं को उल्लेखित किया गया है।

अन्ततः यह महती कार्य संपन्न हुआ है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, केवल अपनी वैयक्तिक, अपने आत्मिकतोस के कारण लिखना-पढ़ना एक बात है और शोध और अनुसंधान दृष्टि से लिखना-पढ़ना एक दूसरी बात है। वहाँ पर हमें एक वैज्ञानिक अनुसंधानपरक तटस्थ दृष्टि कोण को लेकर चलना होता है। अतः साहित्यिक विषयों पर शोधपरक अध्ययन करना अत्यंत कठिन होता है। और यह कठिन कार्य मैं सम्पादित कर सका हूँ। उसमें अनेक महानुभावों और व्यक्तिओं की भूमिका रही है। यहाँ उन सबके प्रति मैं

कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

भारतीय परम्परा में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि माना गया है। मेरे समग्र शारीरिक, आर्थिक और बौद्धक विकास में मेरे माता-पिता का प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान रहा है। अतः आज इस महती बेला में मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ और उनके आशीर्वादों की कामना करता हूँ।

हमारे यहाँ मध्यकालीन भक्ति परंपरा में निर्गुण सम्प्रदाय के अन्तर्गत गुरू के महत्व को अपरिहार्य समझा गया है। जायसी ने तो कह दिया है-'गुरू सुवाजेहि पंथ दिखावा' तथा निर्गुण भक्ति के आधार स्तंभ कबीर तो गुरू का स्थान गोविंद से भी ऊपर निर्धारित और प्रमाणित करते हैं। शोध अनुसंधान के कार्य में भी यही बात लागू होती है। उसमें गुरू अर्थात् निर्देशक की जो भूमिका है उसे कोई नकार नहीं सकता। अंग्रेजी उक्ति-'Present Every-where, visible nowhere' की भांति दृश्यमान न होते हुए भी शोध-प्रबंध की समग्र प्रक्रिया में पग-पग पर उनकी उपस्थिति होती है। अतः मेरे मार्गदर्शक प्रोफेसर डॉ. पारुकांत देसाई के प्रति मैं अपनी श्रद्धा भक्ति हृदय की गहराईयों के साथ व्यक्त करता हूँ। जिनके योग्य मार्गदर्शन के अभाव में यह कार्य संपन्न नहीं हो सकता था। उनके ऋण से उऋण होना कदापि संभव न होगा।

डॉ. साहब के अतिरिक्त हिन्दी विभाग के उन तमाम-तमाम प्राध्यापकों को भी स्मरण करना चाहूँगा जिन्होंने प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से मरो उत्साह वर्धन किया है। उनमें वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी, वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. शैलजा भारद्वाज, डॉ. शन्नो पांडेय, डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, डॉ. कल्पना गवली, डॉ. कनुभाई निनामा, डॉ. एन.एस. परमार इत्यादि का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

गुजरात के हिन्दी के वरिष्ठ आचार्यों तथा प्राध्यापकों में डॉ. शिवकुमार

मिश्र, डॉ. मदनगोपाल गुप्त, डॉ. रघुवीर चौधरी, डॉ. भोलाभाई पटेल, डॉ. सनतकुमार व्यास, डॉ. नवनीत चौहान, डॉ. आलोक गुप्त, डॉ. एस.पी. शर्मा, डॉ. रामकुमार गुप्त प्रभृति विद्वत्तवर्य के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ। क्योंकि मेरे चिंतन पक्ष को परिपुष्ट करने में किसी न किसी प्रकार का उनका योगदान रहा है। मैं उन विद्वानों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मूल्यवान सन्दर्भ ग्रंथों का सहयोग मैंने प्राप्त किया है।

यहाँ मैं सेठ पी.टी. आर्ट्स एण्ड सायन्स कॉलेज के प्राध्यापकों तथा महानुभावों में कार्यकारी आचार्य डॉ. निमेश व्यास, तत्कालीन कार्यकारी आचार्य प्रा. विनोद गाँधी, कुमारी डॉ. एस.एन. पाठक, डॉ. राजेश व्यास, राजुभाई रबारी, वरिष्ठ प्राध्यापिका श्रीमती निवेदिता पंडया तथा श्रीमती गायत्री भट्ट तथा मित्रों में डॉ. जगन्नाथ पंडित, मोहनभाई मेहरा, प्रा. अजय सोनी, गोहिल महेन्द्र सिंह, नरेन्द्र भोई तथा काकणपुर के तत्कालीन आचार्य श्री ऋषभ मेहता एवं कुमार जैमिनी आदि के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। क्योंकि उनके उत्साहवर्धन अभाव में शोध-प्रबंध का कार्य कदाचित संभव न होता। मेरे स्नेही विद्यार्थियों ने भी मेरे इस कार्य को संपन्न करने में अपना योगदान दिया है उनमें प्रमुख रूप से कु. दीपिका राठोड, योगेश पटेल, भोई धर्मेन्द्र, कमलेश टिलवाणी आदि का भी मैं आभारी हूँ।

इसके साथ ही मैं उन पुस्तकालयों का आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने मेरे शोधकार्य में पूर्ण सहयोग दिया है -सेठ पी.टी. आर्टस एण्ड साइंस कॉलेज गोधरा, आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, देवगढ़ बारिया, आर्ट्स एण्ड साइंस कॉलेज, डाकोर, भाईकाका पुस्तकालय, वल्लभ विद्यानगर, आर्ट्स एण्ड साइंस कॉलेज लूनावाडा, गुजरात विद्यापीठ पुस्तकालय, अहमदाबाद, और आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज काकणपुर का मैं तहे दिल से आभार प्रकट

करता हूँ क्योंकि उनके ही सहयोग से मेरा यह शोधकार्य संपन्न हो सका है।

अंत में मेरे परिवारजनों में बंधु-बान्धव सुभाष भाई, सुरेश भाई, कांति चाचा, महेन्द्र कुमार मेहरा तथा मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शोभा तथा उनके पिताश्री एस.डी. मेहरा, पुत्र यशकुमार का मैं उल्लेख करना चाहूँगा। क्योंकि उनके प्रति प्रेम और स्नेह के कारण ही मुझे शोधकार्य की ऊर्जा प्राप्त होती रही है।

मेरा यह शोधकार्य भविष्यत अनुसंधित्सुओं को यत्किंचित भी लाभ पहुँचा सका तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा। मुझे अपनी सीमाओं का ज्ञान है। अतः त्रुटियों के लिए पहले से ही क्षमाप्रार्थी हूँ। अंत में डॉ. भवानी प्रसाद मिश्र की निम्नलिखित पंक्तियों के साथ विरमता हूँ -

''कहने में अर्थ नहीं
कहना पर व्यर्थ नहीं
कहने में मिलती है
एक तल्लीनता।''

*

दिनाँक : 4-5-06

विनीत

BMaheta

प्रा. दिलीप के. मेहरा
हिन्दी विभाग,
सेठपी.टी.कॉलेज, गोधरा